



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 61]

नई दिल्ली, मंगलवार, मार्च 17, 2015/फाल्गुन 26, 1936

No. 61]

NEW DELHI, TUESDAY, MARCH 17, 2015/PHALGUNA 26, 1936

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

जाँच शुरूआत अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 मार्च, 2015

(निर्णायक समीक्षा)

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित कुमेरिन के आयातों पर लागू पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा जाँच की शुरूआत

सं. 15/26/2014-डीजीएडी.—1995 में और उसके बाद यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षतिनिर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने चीन जन.गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित "कुमेरिन" (जिससे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी।

2. यतः संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित मूल जाँच प्राधिकारी द्वारा दिनांक 29 जनवरी, 2010 की अधिसूचना संख्या 14/17/2009-डीजीएडी द्वारा शुरू की गई थी और प्राधिकारी द्वारा दिनांक 29 जनवरी, 2010 की अधिसूचना सं. 14/17/2009-डीजीएडी द्वारा प्रारंभिक जाँच परिणाम प्रकाशित किए गए थे। केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 23 मार्च, 2010 की अधिसूचना संख्या 38/2010-सीमा शुल्क द्वारा अंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था। प्राधिकारी द्वारा दिनांक 7 जुलाई, 2010 की अधिसूचना सं. 14/17/2009-डीजीएडी द्वारा अंतिम जाँच परिणाम प्रकाशित किए गए थे और केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 20 अगस्त, 2010 की अधिसूचना संख्या 82/2010-सीमा शुल्क द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया था।

3. और यतः फ्रेगरेंस एण्ड फ्लेवर्स एसोसिएशन ने सेस्टेट के समक्ष एक अपील दायर की है जिसमें पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने को चुनौती दी गई है। माननीय सेस्टेट ने दिनांक 17 जून, 2011 के अपने आदेश द्वारा अंतिम जाँच परिणामों और दिनांक 20 अगस्त, 2010 की सीमाशुल्क अधिसूचना को अस्थगित कर दिया और 6 महीने की अवधि के भीतर अपीलकर्ता को सुनवाई का तर्कसंगत अवसर प्रदान करने के बाद पुनः निर्णय के लिए मामले को वापस निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास भेजा है। प्राधिकारी ने दिनांक 23 दिसम्बर, 2011 की

अधिसूचना सं. 14/17/2009-डीजीएडी द्वारा पुनः जाँच परिणाम प्रकाशित किए और केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 8 फरवरी, 2012 की अधिसूचना संख्या 12/2012-सीमा शुल्क द्वारा पाटनरोधी शुल्क लागू करने की संगत अधिसूचना जारी की गई थी।

यतः, मै. एटलस फाइन कैमिकल्स प्रा. लि. ने अधिनियम और नियमावली के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादकों की ओर से प्राधिकारी के समक्ष विधिवत रूप से साक्ष्यांकित आवेदन दायर किया है जिसमें चीन जन.गण के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन के जारी रहने और उसकी पुनरावृत्ति होने तथा घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति होने की संभावना का आरोप लगाया गया है और संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर लागू पाटनरोधी यशुल्क की समीक्षा करने, उसे जारी रखने और उसे बढ़ाने का अनुरोध किया गया है। मै. एटलस फाइन कैमिकल्स प्रा. लि. ने घरेलू उद्योग के रूप में अपेक्षित सूचना प्रस्तुत की है।

शामिल देश

4. इस जाँच में शामिल देश चीन जन. गण है।

विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

5. मूल जाँच तथा वर्तमान निर्णायक समीक्षा जाँच में विचाराधीन उत्पाद सभी प्रकार का कुमेरिन है। कुमेरिन एक सुगंधित रसायन है, जो सफेद क्रिस्टल, फ्लेक या पाउडर रूप में हो सकता है। इसका उपयोग सुगंधित यौगिक तैयार करने में किया जाता है। मूल जाँच में विचाराधीन उत्पाद को निम्नानुसार परिभाषित किया गया था:

"5. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद सभी प्रकार का कुमेरिन (जिससे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) है। कुमेरिन (रासायनिक सूत्र सी9एच6ओ2) रसायनों के लेक्टोन परिवार से संबंधित है। यह एक सुगंध रसायन है, जो सफेद क्रिस्टल, फ्लेक या पाउडर रूप में हो सकता है। इसकी विशेष गंध नई कटी घास जैसी है और कुछ वनीला की तरह का कड़वा-मीठा स्वाद है। कुमेरिन का उपयोग सुगंधित यौगिक तैयार करने में किया जाता है और उन सुगंधित यौगिक का उपयोग साबुन, डिटर्जेंट, कास्मेटिक्स, अगरबत्ती और फाइन सुगंध बनाने में किया जाता है। इसमें से अच्छी गंध निकलती है और वह अनेक अन्य घरेलू और औद्योगिक उत्पादों में खराब गंधों को रोकने के लिए प्रयुक्त होता है। कुमेरिन, जो मूल रूप से टोंका बीन्स से प्राप्त एक प्राकृतिक उत्पाद है, इसे अब कृत्रिम रूप से उत्पादित किया जाता है। उसे दो कृत्रिम प्रक्रियाओं अर्थात् (i) सेलिसाइलेडीहाइड को प्राप्त करने के लिए फेनोल से शुरू होकर पर्सिन प्रतिक्रिया के द्वारा और (ii) आर्थो-क्रेसोल से शुरू होकर जिससे रासचिंग पद्धति भी कहा जाता है जिसमें सेलिसाइलेडीहाइड को आर्थो-क्रेसोल से बनाया जाता है और तत्पश्चात् कुमेरिन में परिवर्तित किया जाता है। दोनों प्रक्रियाओं में सेलिसाइलेडीहाइड और एसेटिक एनहाइड्राइड, एसिटिक अम्ल के प्रेरक के रूप में सोडियम एसिटेट की उपस्थिति में प्रतिक्रिया करता है और अपरिष्कृत कुमेरिन को डिस्टिलेशन द्वारा एसिटिक अम्ल से अलग किया जाता है। अपरिष्कृत कुमेरिन को अनेक डिस्टिलेशन द्वारा और शुद्ध बनाया जाता है और उसके बाद मेन्थोल में क्रिस्टलीकृत किया जाता है। क्रिस्टलीकृत उत्पाद को सेंट्रीफ्यूजन द्वारा अलग किया जाता है और सुखाया जाता है। कुमेरिन का मुख्य भौतिक विनिर्देशन उसकी शुद्धता है, जिसके लिए गलनांक संकेतक होता है।

6. इस उत्पाद को सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, के अध्याय 29 (कार्बनिक रसायन) और सीमाशुल्क उप-शीर्ष संख्या 2932.21.00 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि सीमा-शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

6. चूंकि प्रस्तावित जाँच एक निर्णायक समीक्षा जाँच है इसलिए विचाराधीन उत्पाद का दायरा मूल जाँच के विचाराधीन उत्पाद के दायरे के समान रहेगा। संबद्ध वस्तु को सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, के अध्याय 29 (कार्बनिक रसायन) और सीमाशुल्क उप-शीर्ष संख्या 2932.21.00 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि सीमा-शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है।

समान वस्तु

7. समान वस्तु के संबंध में नियम 2 (घ) में निम्नानुसार व्यवस्था है:—

"समान वस्तु" का अर्थ ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटित किए जाने की जाँच के अधीन वस्तु के सभी तरह से समान यह उसके जैसी हो या ऐसी किसी वस्तु की अनुपस्थिति में कोई अन्य वस्तु जो यद्यपि सभी तरह से समान नहीं हो, तथापि उसमें जाँच के अधीन वस्तु से बिल्कुल मिलती-जुलती विशेषताएं हों।

8. आवेदक ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित कुमेरिन और संबद्ध देश से आयातित कुमेरिन में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। आवेदक द्वारा उत्पादित कुमेरिन और संबद्ध देश से आयातित कुमेरिन में भौतिक और रासायनिक विशेषताओं, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन और वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसे मापदंडों की दृष्टि से तुलनीय विशेषताएं हैं। यह आवेदन लागू पाटनरोधी शुल्क की राशि की समीक्षा करने, उसे जारी रखने और उसे बढ़ाने के लिए है और समान वस्तु के मुद्दे पर पूर्ववर्ती जाँचों में पहले ही निर्धारण किया गया है। पूर्ववर्ती जाँचों में प्राधिकारी ने पहले ही यह माना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु संबद्ध देश से आयातित वस्तु के समान वस्तु है।

घरेलू उद्योग और उसकी योग्यता

9. मै. एटलस फाइन कैमिकल्स प्रा. लि. ने घरेलू उद्योग के रूप में अपेक्षित सूचना प्रदान की है। उपलब्ध सूचना के अनुसार आवेदक का संबद्ध वस्तु के भारतीय उत्पादन में प्रमुख हिस्सा बनता है और वह वर्तमान याचिका दायर करने की योग्यता रखता है। अतः प्राधिकारी ने

नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग माना है और यह याचिका संबंधित नियमावली के नियम 5 के अनुसार वह योग्यता संबंधी मापदंडों को पूरा करती है।

निर्णायक समीक्षा की शुरुआत

10. यतः, दायर किए गए विधिवत रूप से साक्ष्यांकित आवेदन और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 क (5) के अनुसार प्राधिकारी एतद्वारा संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के संबंध में लागू शुल्कों को जारी रखने की समीक्षा करने और इस बात की जाँच करने कि क्या ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने और घरेलू उद्योग को क्षति होने की आशंका है, के लिए निर्णायक समीक्षा की शुरुआत करते हैं।

जांच अवधि

11. वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि (पीओआई) 1 अप्रैल, 2013 से 30 सितम्बर, 2014 तक (18 महीने) की है और क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ पिछले तीन वर्षों अर्थात् अप्रैल 2010 - 2011, 2011 - 2012, 2012 - 2013 के आंकड़ों पर विचार किया गया है।

प्रक्रिया

12. वर्तमान निर्णायक समीक्षा में दिनांक 7 जुलाई, 2010 की अधिसूचना सं. 14/17/2009-डीजीएडी द्वारा मूल जांच के अंतिम जांच परिणाम और 23 दिसम्बर, 2011 की सेस्टेट पुनः जाँच परिणाम अधिसूचना संख्या 14/17/2009-डीजीएडी के सभी पहलू शामिल हैं।

13. संबंधित नियमावली के नियम 6, 7, 8, 9, 10, 11, 16, 17, 18, 19 और 20 के उपबंध आवश्यक संशोधनों के साथ इस समीक्षा पर लागू होंगे।

सूचना प्रस्तुत करना

14. संबद्ध देश में ज्ञात निर्यातकों, भारत में स्थित उनके दूतावासों के जरिए संबद्ध देश की सरकार, उत्पाद से संबंधित समझे जाने वाले भारत में ज्ञात आयातकों और प्रयोक्ताओं को निर्धारित प्रपत्र में एवं ढंग से संगत सूचना प्रस्तुत करने और निम्नलिखित पते पर प्राधिकारी को अपने विचारों से अवगत कराने के लिए अलग से लिखा जा रहा है:-

निर्दिष्ट प्राधिकारी

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

वाणिज्य विभाग

पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय

चौथा तल, जीवन तारा बिल्डिंग

5, संसद मार्ग,

नई दिल्ली-110001

15. कोई अन्य हितबद्ध पक्षकार भी जांच से संगत सूचना संबंधी कोई अनुरोध नीचे दी गई समय सीमा के भीतर निर्धारित ढंग और पद्धति से प्रस्तुत कर सकता है। प्राधिकारी के समक्ष कोई गोपनीय अनुरोध करने वाले किसी पक्षकार को अन्य पक्षकारों को उपलब्ध कराए जाने के लिए उक्त अनुरोध का अगोपनीय अंश प्रस्तुत करना होगा।

समय-सीमा

16. वर्तमान समीक्षा से संबंधित कोई सूचना और सुनवाई हेतु कोई अनुरोध इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनांक (40 दिनों) के भीतर उपर्युक्त पते पर प्राधिकारी के पास लिखित में भेजी जानी चाहिए। यदि निर्धारित समय सीमा के भीतर कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है अथवा प्राप्त सूचना अधूरी होती है, तो प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुसार, "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर अपने जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं।

17. सभी हितबद्ध पक्षकारों को एतद्वारा सलाह दी जाती है कि वे इस समीक्षा जांच की शुरुआत की तारीख से 40 दिनों के भीतर वर्तमान मामले में अपने हित (हित के स्वरूप सहित) की सूचना दें और प्रश्नावली के अपने उत्तर दायर करें तथा पाटनरोधी उपाय जारी रखने की जरूरत अथवा अन्यथा के बारे में घरेलू उद्योग के आवेदन पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करें।

गोपनीय आधार पर सूचना प्रस्तुत करना

18. यदि प्रश्नावली के उत्तर/अनुरोधों के किसी भाग के बारे में गोपनीयता का दावा किया जाता है तो उसे दो अलग-अलग सैटों (क) गोपनीय रूप से अंकित (शीर्षक, सूची, पृष्ठ संख्या आदि) और (ख) अगोपनीय रूप में अंतिम दूसरा सैट (शीर्षक, सूची, पृष्ठ संख्या आदि) में

प्रस्तुत किया जाना चाहिए। प्रस्तुत की गई समस्त सूचना पर प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर स्पष्ट रूप से "गोपनीय" या "अगोपनीय" अंकित होना चाहिए।

19. किसी गोपनीय अंकन के बिना प्रस्तुत सूचना को अगोपनीय माना जाएगा और प्राधिकारी अन्य हितबद्ध पक्षकारों को ऐसी अगोपनीय सूचना का निरीक्षण करने की अनुमति देने के लिए स्वतंत्र होंगे। समस्त हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय रूपांतरण की दो (2) प्रतियां और अगोपनीय रूपांतरण की दो (2) प्रतियां सॉफ्ट प्रतियों के साथ, प्रस्तुत की जानी चाहिए।

20. गोपनीय रूप में दावा की गई सूचना हेतु; सूचना प्रदाता के लिए यह अपेक्षित है कि वह प्रदान की गई सूचना के साथ इस आशय के यथोचित कारण का एक विवरण उपलब्ध कराए कि ऐसी सूचना का प्रकटन क्यों नहीं किया जा सकता और/अथवा ऐसी सूचना का सारांश क्यों संभव नहीं है।

21. अगोपनीय रूपांतरण को उस सूचना, जिसके बारे में गोपनीयता का दावा किया गया है, पर निर्भर रहते हुए अधिमानतः सूचीबद्ध या रिक्त छोड़ी गई/सारांशीकृत गोपनीय सूचना के साथ गोपनीय रूपांतरण की अनुकृति होना अपेक्षित है। अगोपनीय सारांश पर्याप्त विस्तृत होना चाहिए ताकि गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना की विषय वस्तु को समुचित ढंग से समझा जा सके। तथापि, आपवादिक परिस्थितियों में गोपनीय सूचना प्रदाता पक्षकार यह इंगित कर सकते हैं कि ऐसी सूचना का सारांश संभव नहीं है; तो प्राधिकारी की संतुष्टि के अनुसार इस आशय के कारणों का एक विवरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए कि सारांश क्यों संभव नहीं है।

22. प्रस्तुत सूचना के स्वरूप की जांच करने के बाद प्राधिकारी गोपनीयता के अनुरोध को स्वीकार या अस्वीकार कर सकते हैं। प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अपेक्षित नहीं है अथवा सूचना प्रदाता उक्त सूचना को सार्वजनिक करने या सामान्य रूप में अथवा सारांश रूप में उसके प्रकटन को प्राधिकृत करने का अनिच्छुक है तो वह ऐसी सूचना की अनदेखी कर सकते हैं।

23. सार्थक अगोपनीय रूपांतरण के बिना या गोपनीयता के दावे के बारे में यथोचित कारण के विवरण के बिना किए गए किसी अनुरोध को प्राधिकारी रिकॉर्ड में नहीं ले सकते हैं। संतुष्ट होने और प्रदत्त सूचना की गोपनीयता की जरूरत को स्वीकार कर लेने के बाद प्राधिकारी ऐसी सूचना के प्रदाता पक्षकार के विशिष्ट प्राधिकार के बिना किसी पक्षकार को उसका प्रकटन नहीं करेंगे।

सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण

24. नियमावली के नियम 6(7) के अनुसार कोई हितबद्ध पक्षकार उस सार्वजनिक फाइल का निरीक्षण कर सकता है जिसमें अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय रूपांतरण रखे गए हैं।

असहयोग

25. यदि कोई हितबद्ध पक्षकार उचित अवधि के भीतर आवश्यक सूचना जुटाने से मना करता है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराता है या जांच में अत्यधिक बाधा डालता है तो प्राधिकारी अपने पास "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर जांच परिणाम दर्ज कर सकते हैं तथा केन्द्र सरकार को यथोचित सिफारिशें कर सकते हैं।

जे.के. दादू, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

INITIATION NOTIFICATION

New Delhi, the 16th March, 2015

(Sunset Review)

Initiation of Sunset Review of Anti-dumping Duty imposed on imports of Coumarin, originating in or exported from China PR.

F. No. 15/26/2014-DGAD - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and thereafter (hereinafter also referred as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred as the Rules), the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) recommended imposition of anti-dumping duty on imports of "Coumarin" (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as the subject country).

2. Whereas, the original investigation concerning imports of the subject goods from the subject country was initiated by the Authority vide Notification No. 14/17/2009-DGAD dated 29th January, 2010 and preliminary finding was published by the Authority vide Notification No. No. 14/17/2009-DGAD dated 29th January, 2010. Provisional anti-dumping duty was imposed by the Central Government vide Notification No. 38/2010-Customs dated 23rd March, 2010. The final finding was published by the Authority vide Notification No. 14/17/2009-DGAD dated 7th July 2010 and definitive anti-dumping duty was imposed by the Central Government vide Notification No. 82/2010-Customs dated 20th August, 2010.

3. And whereas, Fragrance and Flavors Association had filed an appeal before CESTAT, challenging the imposition of Anti-dumping duty. The Hon'ble CESTAT vide its order dated 17th June, 2011 set aside the Final Findings and the Customs notification dated 20th August, 2010 and remanded the matter back to Designated Authority for fresh decision after granting a reasonable opportunity of hearing to the appellant within a period of 6 months. The Authority published the remanded finding vide Notification No. 14/17/2009-DGAD dated 23rd December 2011 and the relevant notification imposing the anti-dumping duty was issued by the Central Government vide Notification No. 12/2012-Customs dated 8th February, 2012.

Whereas, M/s Atlas Fine Chemicals Pvt. Ltd., has filed a duly substantiated application before the Authority, on behalf of the producers of the subject goods in India, in accordance with the Act and the Rules, alleging likelihood of continuation or recurrence of dumping of the subject goods, originating in or exported from China PR and consequent injury to the domestic industry and have requested for review, continuation and enhancement of the anti-dumping duties, imposed on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject country. M/s Atlas Fine Chemicals Pvt. Ltd. has provided required information as domestic industry.

Country involved

4. The country involved in this investigation is China PR.

Product under consideration and Like Article

5. The product under consideration in the original investigation as well as the present sunset review investigation is Coumarin of all types. Coumarin is an aroma chemical, which can be in the form of white crystals, flake or powder. It is used in the preparation of fragrance compounds. In the original investigation, the PUC was defined as follows:

"5. The product under consideration in the present investigation is Coumarin of all types (hereinafter referred as "subject goods"). Coumarin (Chemical Formulae C₉H₆O₂) belongs to the lactone family of chemicals. It is an aroma chemical, which can be in the form of white crystals, flake or powder. It has characteristic odour of newly mown hay and bittersweet somewhat similar to vanilla. Coumarin is used in the preparation of fragrance compounds and those fragrance compounds are used in the production of soaps, detergents, cosmetics, incense sticks, and fine fragrances. It imparts pleasant fragrance and masks unpleasant odors in many other household and industrial products. Coumarin, which was originally a natural product obtained from Tonka beans is now produced synthetically. It can be obtained by two synthetic processes i.e. (i) Starting from phenol to obtain Salicylaldehyde followed by Perkin reaction and (ii) Starting from Ortho-cresol which is also called Raschig method in which Salicylaldehyde is made from Ortho-cresol and then converted into Coumarin. In both the processes Salicylaldehyde and Acetic Anhydride react in the presence of Sodium Acetate in Acetic Acid as catalyst and crude Coumarin is separated from Acetic Acid by distillation. The crude Coumarin is further purified by several distillations and then crystallized in Methanol. The crystallized product is separated by centrifugation and dried. The main physical specification of Coumarin is its purity, for which the melting point is the indicator.

6. The product is classified under Chapter 29 (Organic Chemical) of the Customs Tariff Act under Customs Sub-heading No. 2932.21.00. However, customs classification is indicative in nature and not binding on the scope of the investigations."

6. Since the proposed investigation is a sunset review investigation, the scope of the product under consideration remains the same as that of original investigation. The subject goods fall under Chapter 29 (Organic Chemical) of the Custom Tariff Act under subheading No. 2932.21.00. The Customs classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present proposed sunset review investigation.

Like Article

7. Rule 2(d) with regard to like article provides as under: -

"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

8. Applicant has claimed that there is no known difference in Coumarin produced by them and exported from the subject country. Coumarin produced by the applicant and imported from the subject country are having comparable characteristics in terms of parameters such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The application filed is for the review, continuation and enhancement of the quantum of the anti-dumping duty in force, and the issue of like article has been already dealt with in the previous investigations. In the earlier investigations the

Authority has already held that the subject goods produced by the domestic industry is like article to the same imported from the subject country.

Domestic Industry & Standing

9. M/s Atlas Fine Chemicals Pvt. Ltd has provided required information as domestic industry. As per the information available, the applicant accounts for a major proportion in Indian production of the subject goods and satisfy the requirement of standing to file the present petition. Therefore, the Authority has considered the applicant as constituting domestic industry within the meaning of the Rule 2(b) of the Rules and the application satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 of the Rules supra.

Initiation of Sunset Review

10. WHEREAS, in view of the duly substantiated application filed and in accordance with Section 9 A (5) of the Act, read with Rule 23 of the Anti-dumping Rules, the Authority hereby initiates a Sunset review investigation to review the need for continued imposition of the duties in force in respect of the subject goods, originating in or exported from the subject country and to examine whether the expiry of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry.

Period of Investigation

11. The period of investigation (POI) for the purpose of the present review is from 1st April, 2013–30th September, 2014 (18 months) and for injury analysis, data of the previous three years, viz., 2010-11, 2011-12, 2012-13.

Procedure

12. The present sunset review covers all aspects of the final findings of the original investigation published vide Notification No. 14/17/2009-DGAD dated 7th July 2010 and the CESTAT remanded Findings Notification No. 14/17/2009-DGAD dated 23rd December 2011.

13. The provisions of Rules 6, 7, 8, 9, 10, 11, 16, 17, 18, 19 and 20 of the Rules supra shall be mutatis mutandis applicable in this review.

Submission of Information

14. The known exporters in the subject country, the Government of the subject country through its embassy in India, the importers and users in India known to be concerned with the product are being addressed separately to submit relevant information in the form and manner prescribed and to make their views known to the Authority at the following address:

Government of India
Ministry of Commerce and Industry
Department of Commerce
Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties
4th Floor, Jeevan Tara Building
5, Parliament Street, New Delhi – 110001

15. Any other interested party may also make its submissions relevant to the investigation in the prescribed form and manner within the time limit set out below. Any party making any confidential submission before the Authority is required to submit a non-confidential version of the same to be made available to the other parties.

Time Limit

16. Any information relating to the present review and any request for hearing should be sent in writing so as to reach the Authority at the address mentioned above not later than forty days (40 Days) from the date of publication of this Notification. If no information is received within the prescribed time limit or the information received is incomplete, the Authority may record its findings on the basis of the facts available on record in accordance with the Anti-dumping Rules.

17. All the interested parties are hereby advised to intimate their interest (including the nature of interest) in the instant matter and file their questionnaire responses and offer their comments to the domestic industry's application regarding the need to continue or otherwise the Anti-dumping measures within 40 days from the date of initiation of this investigation.

Submission of information on confidential basis

18. In case confidentiality is claimed on any part of the questionnaire response/submissions, the same must be submitted in two separate sets (a) marked as Confidential (with title, index, number of pages, etc.) and (b) other set marked as Non-Confidential (with title, index, number of pages, etc.). All the information supplied must be clearly marked as either “confidential” or “non-confidential” at the top of each page and accompanied with soft copies.

19. Information supplied without any confidential marking shall be treated as non-confidential and the Authority shall be at liberty to allow the other interested parties to inspect any such non-confidential information. Two (2) copies of the confidential version and two (02) copies of the non-confidential version must be submitted by all the interested parties.

20. For information claimed as confidential, the supplier of the information is required to provide a good cause statement along with the supplied information as to why such information cannot be disclosed and/or why summarization of such information is not possible.

21. The non-confidential version is required to be a replica of the confidential version with the confidential information preferably indexed or blanked out /summarized depending upon the information on which confidentiality is claimed. The non-confidential summary must be in sufficient detail to permit a reasonable understanding of the substance of the information furnished on confidential basis. However, in exceptional circumstances, parties submitting the confidential information may indicate that such information is not susceptible to summarization; a statement of reasons why summarization is not possible must be provided to the satisfaction of the Authority.

22. The Authority may accept or reject the request for confidentiality on examination of the nature of the information submitted. If the Authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in generalized or summary form, it may disregard such information.

23. Any submission made without a meaningful non-confidential version thereof or without a good cause statement on the confidentiality claim may not be taken on record by the Authority. The Authority on being satisfied and accepting the need for confidentiality of the information provided; shall not disclose it to any party without specific authorization of the party providing such information.

Inspection of public file

24. In terms of rule 6(7) of the Rules, any interested party may inspect the public file containing non-confidential version of the evidences submitted by other interested parties.

Non-cooperation

25. In case any interested party refuses access to and otherwise does not provide necessary information within a reasonable period, or significantly impedes the investigation, the Authority may declare such interested party as non-cooperative and record its findings on the basis of the facts available to it and make such recommendations to the Central Government as deemed fit.

J. K. DADOO, Designated Authority